

आओ मिलकर नफरत
को हराएं
मज़हब नहीं सिखाता
आपस में बैर रखना



CITIZENS FOR JUSTICE AND PEACE
cjp.org.in
info@cjp.org.in

दोस्तो, हम (भारत के लोग) आज एक ऐसे दौराहे पर खड़े हैं, जहां एक तरफ हिंसक और विभाजनकारी ताकतें हमारे दिलोदिमाग पर कब्जा करने में जुटी हैं, प्रोपेगंडा और ताकत के बल पर भारत में एकरंगी संस्करण को बेच रही हैं। दूसरी ओर, तमाम विविधताओं को समेटे एक सहिष्णु और प्राचीन भारत है। एक ऐसा राष्ट्र जहां आस्था की अनगिनत नदियां मिलकर बहती है। हजारों वर्षों से हम सभी धर्मों के मानने वालों ने साझी संस्कृति साझी विरासत को जिया है। मतभेद और बहस मुबाहिसे बहुत हुए, तकरार हुई लेकिन भाई-भाई की तरह फिर एक हो गए, स्वीकार अस्वीकार के बीच एक-दूसरे के साथ रहना सीखा। पर अब वे हमें बांटना चाहते हैं, पूर्वनियोजित और बर्बर घृणा के सहारे। आधिकारिक और गैर अधिकारिक मीडिया का दुरुपयोग कर झूठ-मूठ की निराधार बातें गढ़ी व फैलाई जा रही हैं। रोजी रोटी कमाने, भूख, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और यहां तक कि, हमारे बच्चों के भविष्य जैसे महत्वपूर्ण सवाल को दरकिनार (अनदेखा) करते हुए, जानबूझकर गांव, कस्बे और शहरों की शांति भंग की जा रही है।

ऐसे में हमें क्या करना चाहिए? क्या हमें बैठकर देखना चाहिए कि नफरत कैसे हमारे जीवन में हावी होती जा रही है? कैसे शासन प्रशासन और कानून की जगह त्रिशूल और तलवारे ले रही है, तर्क और मतभेद रखने की प्रक्रिया को खत्म कर दिया गया है क्या हम अपने बीच घट रही निर्दयी लंपटताओ और उससे हो रहे नुकसान को स्वीकार कर, दूर से देखते रहें? या, हम मजबूती से और सामूहिक रूप से कदम उठाएँ? नफरत को पहचानें और रोकेँ? हमें अपने आस पड़ोस, हाउसिंग सोसाइटी और बस्तियों, व्यवसायों और कार्यस्थलों में एकजुट होना होगा। सूझ-बूझ और मुखरता दिखानी होगी तभी हम, हमारे चारों ओर हिंसा के घिरते जा रहे बादलों को दूर कर सकते हैं।

कहावत भी है हेट हर्ट्स, हार्मनी वर्क्स (नफरत से नुकसान होता है सद्भाव ही रास्ता है।) स्वतंत्र भारतीय नागरिक होने के नाते हमें मिलकर, भारतीय संविधान की प्रस्तावना में स्पष्ट तौर से उल्लिखित समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व (सामाजिक, सांप्रदायिक सद्भाव) को बनाए रखने की मांग करनी होगी जिसकी, कि संविधान में हमें गारंटी दी गई है। यह वास्तव में काफी सरल है। बस, हमें इंसानियत के नाते एक साथ आना होगा, और कुछ नहीं।

पहला कदम: एक-दूसरे पर विश्वास रखें

हां, हमारे नाम अलग हैं और प्रार्थना में हाथ जोड़ने का तरीका भी अलग है। हां, हमारे खाने का स्वाद अलग हो सकता है, हमारे त्यौहार अलग हैं। लेकिन क्या हम वाकई में अलग हैं? हजारों सालों से हम साथ रहते आ रहे हैं। हमारे जीवन रूपी धागे एक झीनी चदरिया में बुने हुए हैं। एक-दूसरे की भाषा में मौजूद हैं। शब्दों में है जिनका हम उपयोग करते हैं प्रेम और क्रोध व्यक्त करने के लिए, प्रार्थना करने के लिए।

हम अपने द्वारा खाए जाने वाले भोजन में एक दूसरे का स्वाद चख सकते हैं। क्या हम पूछ सकते हैं, खट्टी दाल हिंदू है या मुस्लिम? फिर हम जो संगीत सुनते हैं उसके बारे में क्या? यहाँ खुसरो के तबले और सरस्वती की वीणा से सुरताल होती है। यही हमारी साझा संस्कृति है। यही हमारे जीने का तरीका है। इसी से हम एक-दूसरे के नाम जानते हैं, एक-दूसरे के रीति-रिवाजों को जानते हैं और उनका सम्मान करते हैं। हम एक दूसरे के सुख-दुख में भागी होते हैं। साथ साथ रोटी (आजीविका) कमाते खाते हैं। हम एक दूसरे के त्योहार मनाते हैं। एक दूसरे के बच्चों की देखभाल करते हैं। हम पड़ोसी हैं, दुश्मन नहीं। वो भी सिर्फ इसलिए कि राजनीति से प्रेरित एक वर्ग, हमसे ऐसा कह रहा है।

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम
सबको सन्मति दे भगवान

हमें न केवल एक दूसरे पर विश्वास को बरकरार रखना होगा बल्कि इसे (विश्वास को) व्यक्त भी करना होगा। एक दूसरे पर भरोसा करना होगा। आपस में बात करनी होगी। जो मतभेद होंगे उन्हें बातचीत और चर्चा, यहां तक कि तर्क-वितर्क से भी सुलझाया जाना होगा। हमें एक-दूसरे की उपस्थिति में तलवारें या पत्थर नहीं उठाना है। बुद्ध की भूमि, गांधी और मौलाना आजाद के भारत, फुले अम्बेडकर की भूमि में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं हो सकती है।

हमें एक दूसरे के प्रति आपसी सम्मान और प्यार जताना होगा।

दूसरा कदम: धोखे से सावधान रहें।

क्या कोई खबर आपको गुस्से और लाचारी से भर रही है? क्या अब आप अपने समुदाय के खिलाफ हुए ऐसे अन्याय के बारे में सीख रहे हैं जिसके बारे में पहले कोई नहीं जानता था? क्या किसी अल्पसंख्यक द्वारा आपकी धार्मिक भावनाओं को लगातार आहत किया जा रहा है? क्या आपने इस संभावना पर विचार किया है कि अच्छी तरह से प्रशिक्षित पेशेवरों की संगठित टीम हमें यह सब एक प्रोपेगेंडा के तौर पर बेच रही है? किसी की राय को आप समाचार के रूप में तो ग्रहण नहीं कर रहे हैं? क्या यह संभव है कि 'अत्यावश्यक (ब्रेकिंग) समाचार', 'अविश्वसनीय सत्य', 'वास्तविक इतिहास' और परेशान करने वाले फोटो और वीडियो व्हाट्सएप फॉरवर्ड (कई बार फॉरवर्ड किया गया) के नाम पर कोई झूठ (फेक न्यूज) जो आपको अभी-अभी प्राप्त हुआ है वह आपके दिल में विभाजन का बीज बोने व आपको गुस्सा दिलाने के लिए है?

आजकल हर घर में कम से कम एक मोबाइल फोन है, और लगभग सभी के पास सोशल मीडिया अकाउंट है या व्हाट्सएप है। यही वह जगह है जहां हम अक्सर सबसे ज्यादा नफरत पाते हैं।

कभी-कभी यह फेसलेस ट्रोल और आईटी सेल के लोग होते हैं जो घृणास्पद या उपहास से भरे हैशटैग चलाते हैं, या प्रभावशाली सामुदायिक नेता भड़काऊ भाषण देकर नफरत व हिंसा भड़काते हैं। कभी-कभी परोक्ष धमकी या सामाजिक या आर्थिक बहिष्कार का आह्वान भी किया जाता है।

इसलिए हमारे फोन और टीवी पर, निजी बातचीत और राजनीतिक सभाओं में गलत सूचनाओं (भ्रामक या झूठे दावे जो इस विश्वास के साथ फैले हैं कि यह सच है) और दुष्प्रचार (जानबूझकर फर्जी या घृणित जानकारी) से सावधान रहें।

आमतौर पर, दुष्प्रचार के इस प्रसार का मुकाबला करने के लिए, हमें कोविड-19 वायरस को ट्रैक करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली 'टेस्ट-एंड-ट्रेस' पद्धति को अपनाना होगा। जो निम्न (स्टेप) हैं।

- कंटेंट की सटीकता का परीक्षण करें। गूगल करें। कई स्रोतों से जाँच करें। अगर यह सच है तो आपको कई लिंक मिल जाएंगे। यदि यह फर्जी है, तो कई ऑनलाइन फैक्ट चेक वेबसाइटों ने इसे पहले ही बता दिया होगा।
- इसके बाद वापस सोर्स पर ट्रेस करें: कि इसे कौन साझा कर रहा है? उन्हें यह कहाँ मिला? क्या यह व्यक्ति एक ही तरह की कहानियों को बार-बार साझा कर रहा है? क्यों?
- इसे और फैलने से रोकने के लिए आइसोलेट करें। फॉरवर्ड न करें। अगर यह भड़काऊ है तो इसे आगे साझा न करें। चेन तोड़ें। हमेशा संशय करें, जब तक आप सत्यापित नहीं करते तब तक कंटेंट को शेयर न करें। यदि संदेश आपको अल्पसंख्यकों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए उकसाना चाहता है, आपके क्रोध या चिंता के स्तर को बढ़ाता है और बदले की भावना को बढ़ाता है, तो जान लें कि यह मैसेज प्रोपेगेंडा है।

नफरत के खिलाफ युवा समूहों और शांति स्थापित करने वाली पहलों का गठन, रचनात्मक संदेश, रंगमंच और गीतों का उपयोग करके इसे रोका जा सकता है। इन गतिविधियों से हमारे बीच फैला जहर न केवल कम होगा बल्कि हमें सशक्त करेगा और इसे एक साथ करने के हमारे संकल्प को मजबूत करेगा।

भारतीय कानून का उल्लंघन करने वाले नफरत भरे कार्य की रिपोर्ट करना (भारतीय दंड संहिता और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धाराओं के अंतर्गत) हमें जिम्मेदार नागरिक बनाता है। हम CJP के माध्यम से इस नफरत को पहचानने और उसका मुकाबला करने के लिए तैयार करने में आपकी मदद कर सकते हैं।

इस तरह की घृणा और अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई देखना चाहते हैं, तो कंटेंट को cjpindia@gmail.com पर भेजें या हमें 7506661171 पर व्हाट्सएप करें या नफरत की रिपोर्ट करने के लिए cjp.org.in/hate-hatao पर क्लिक करें। हम इससे लड़ने में आपकी मदद करेंगे।

तीसरा कदम: संविधान पर भरोसा रखें।

भारत में नफरत के प्रचार के खिलाफ सटीक कानून हैं। धर्म, जाति, जन्म स्थान, निवास, भाषा के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच वैमनस्य, दुश्मनी या घृणा की भावनाओं को बढ़ावा देने का कोई भी प्रयास एक दंडनीय अपराध है। बाबासाहेब अम्बेडकर का संविधान हमें और अधिक स्पष्टता प्रदान करता है -

अनुच्छेद 14: कानून के समक्ष समानता (कानून की नजर में सभी भारतीय समान हैं)

अनुच्छेद 15: धर्म, वंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध (राज्य और समाज में भेदभाव नहीं)

अनुच्छेद 16: सार्वजनिक रोजगार के मामलों में अवसर की समानता

अनुच्छेद 17: छूआछूत का उन्मूलन

अनुच्छेद 19: अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संगठन बनाने, आंदोलन और व्यवसाय करने की स्वतंत्रता का अधिकार

अनुच्छेद 21: जीवन और व्यक्तिगत आजादी की सुरक्षा का अधिकार (जीवन का अधिकार)

ये भारतीय संविधान के अध्याय III के तहत गारंटीड और अवेचनीय (गैर-परक्राम्य) मौलिक अधिकार हैं।

लेकिन इन मूल्यों की हम सबको मिलकर रक्षा करने की आवश्यकता है।

अध्याय IV के तहत, राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों का उद्देश्य सामाजिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध एक राज्य और समाज बनना है जहां एक समान और सम्मानजनक वेतन, काम करने के अधिकार और काम की मानवीय स्थितियां, प्रारंभिक बचपन के अधिकार की देखभाल को बढ़ावा देने और श्रमिकों की भागीदारी, रोजगार और पोषण के अधिकार के सभी लक्ष्य और गारंटी शामिल हैं जिनके लिए हमें मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

इन आदर्शों के लिए हमें विभिन्न स्रोतों से प्रेरणा मिल सकती है, धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष। लेकिन सभी लोगों और भारतीयों के लिए हमारा उद्देश्य समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और गैर-भेदभाव के बुनियादी सिद्धांतों को बनाए रखने वाला होना चाहिए।

चौथा कदम: डरो मत, क्रोध मत करो।

राजनीति से प्रेरित गुंडों को आपको डराने और धर्म के नाम पर भड़काने में कामयाब न होने दें। भारत में हम एक धर्म को दूसरे से लड़ाने के लिए, एक समूह को दूसरे के खिलाफ खड़ा करने के लिए सरकारों का चुनाव नहीं करते हैं। हम उन्हें नौकरी और रोजगार के अवसर सृजित करने और कीमतों को नियंत्रण में रखने के लिए चुनते हैं। उन्हें हमारे लिए कानून बनाना चाहिए, खुद कानून नहीं तोड़ना चाहिए। याद रखें, भड़काऊ भाषण और परोक्ष तौर से एकतरफा टारगेट (डॉग व्हिसल) हिंसा का कारण बन सकते हैं। यह जमीनी कार्यकर्ताओं और कैडर के लिए कानून अपने हाथ में लेने के लिए एक संकेत की तरह होता है। हिंसा का यह स्वरूप हमें डराने और चुप कराने के लिए है। यह कभी-कभी हमें हिंसा में शामिल करने के लिए भी होता है। इसलिए डरो मत। क्रोधित न हों। उत्तेजित न हों। शांत दिमाग रखें और अपने आस-पास के लोगों को शांत करें।

दुर्भाग्य से, कई बार आपकी तमाम कोशिशों के बावजूद हिंसा भड़क जाती है। ऐसे में पड़ोसियों को एक-दूसरे पर भरोसा करना चाहिए। यह हमारे संबंधों की सच्ची परीक्षा है। अगर कोई हमारे दोस्त को नुकसान पहुंचाता है तो क्या हम खड़े होकर देखते रहेंगे या उसका बचाव करेंगे? यदि आप देखते हैं कि आपके इलाके में किसी को गाली दी जा रही है या लक्षित किया जा रहा है, खासकर यदि वे अल्पसंख्यक हैं, तो इसका विरोध करें। अपने साथी नागरिकों के साथ मजबूती से खड़े रहें।

पांचवां कदम: मोहल्ला कमेटियां बनाएं।

हम, सीजेपी में, एक नागरिक पहल का नेतृत्व कर रहे हैं, (एक मॉडल मोहल्ला कमेटी है) जो आस पड़ोस के इलाकों में लोगों को खुद से शांति बनाए रखने में बेहतर मदद कर सकता है। ये लोगों के संगठित समूह या कमेटियां हैं जो मोहल्ले के निवासियों का व्यापक प्रतिनिधित्व करती हैं। ये स्थानीय पुलिस, अग्निशमन विभाग, नगरपालिका तक ही सीमित नहीं होंगी बल्कि विभिन्न अधिकारियों के साथ मिलकर काम करती हैं, ताकि हिंसा की स्थिति में लोगों की रक्षा के लिए यह कमेटियां पहली पंक्ति की भूमिका अदा कर सकें। संकट की स्थिति में स्थानीय अधिकारियों के साथ बातचीत की पूरी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने में ये कमेटियां मददगार होती हैं। सप्ताह दर सप्ताह गतिविधियों को संचालित करती हैं। संचार सुनिश्चित करती हैं। यह अफवाहों पर लगाम लगाने और सही स्थिति सामने लाने में काफी मददगार साबित होंगी। याद रहे सच्चे व वास्तविक प्रयास हमेशा फलीभूत होते हैं।

छठा कदम: हर रोज सद्भाव और सह-अस्तित्व की छवियों को कैप्चर करें

आपको उन दर्जनों लोगों की तस्वीर याद है जिन पर पुलिस ने हिंसा की और वे पुलिस को फूल दे रहे हैं? या अपराधियों को फूल दे रहे हैं या वह मुस्कान जो आँसुओं के बीच से चमक रही है? ये वो फोटो या वीडियो या छोटी सी कहानी है जो नफरत से भरे ज्वार को भी मोड़ सकती है।

आओ एक अलग कहानी कहें। अपने पड़ोस से ही ऐसी छवियां तलाशने की मुहिम शुरू करें। हर दिन हर रोज सद्भाव और सह अस्तित्व की एक अलग कहानी बनाए और शेयर करें। #EverydayHarmony #EverydayCo-Existence की। ऐसी छवियों को कैप्चर करने और उन्हें हर भौतिक और डिजिटल प्लेटफार्म या मीडिया पर साझा करने के लिए अपने पड़ोस से ही अभियान शुरू करें। ताकि आपका पड़ोस और शहर ऐसे लोगो और उनके प्रेम संदेशों के लिए जाना जाने लगे। इसके लिए हम सभी को छोटे और बड़े समूहों में, सार्वजनिक स्थानों, सड़कों, पार्कों, पड़ोस में एक साथ आने की जरूरत है ताकि विविधता में एकता को समेटे हमारा (एक दूसरे के प्रति सम्मान, देखभाल और सहानुभूति वाला) भाईचारा और आशा प्रतिबिंबित हो सके। यह एक आम दावत या भोजन हो सकता है, सभी नागरिकों का इफ्तार हो सकता है, शांति और सद्भाव के लिए एक सर्वधर्म बैठक हो सकती है, ईद के दिन शीर कोरमा हो सकता है, यह कक्षाओं और स्कूलों में कार्ड और फूलों का आदान-प्रदान हो सकता है। रक्षा बंधन हो सकता है! किताबों और ड्राइंग सामग्री देने वाला पड़ोस का सांता क्लॉज हो सकता है! आओ अपने आसपड़ोस को देखभाल और खुशी के ऐसे कृत्यों से गुंजने दें। हमें एक दूसरे के साथ अपने सुख-दुख साझा करने की जरूरत है। आइए हम उम्मीद के इन पलों को रिकॉर्ड करें।

मिलकर हम ऐसा कर सकते हैं। नफरत एक धब्बे की तरह है जिसे रोका जा सकता है। हम अकेले नहीं हैं। हम बहुसंख्यक हैं। भारत के शांतिप्रिय लोग। हम, भारत के वफादार, आस्तिक, संशयवादी, अनीश्वरवादी और नास्तिक लोग। हम कवि, दार्शनिक, बुनकर, किसान, सम्राट और सैनिक हैं। यह हमारा देश है, हमारी भूमि है। हम इसका भूत, वर्तमान और भविष्य हैं। और हम लोग हैं जो मिलकर नफरत की इस महामारी से लड़ सकते हैं और उन लोगों पर नियंत्रण पा सकते हैं जो हमें बांटकर हम पर शासन करना चाहते हैं। याद रखें हम हिंसा रोक सकते हैं सद्भाव को मौका दे सकते हैं। परंतु इसकी शुरुआत अपने दिलोदिमाग, घर और अपने मोहल्लों से करनी होगी।

विभिन्न नागरिक पहल कैसे स्थापित करें (मोहल्ला कमेटी सहित) या सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रासंगिक किसी भी जानकारी या अधिक जानने के लिए, सीजेपी से संपर्क करें।

EMAIL: info@cjppindia.org | PHONE: 7506661171 |
DM on Twitter/Facebook/Instagram: @cjppindia

सभी लोगों और भारतीयों के लिए हमारा उद्देश्य समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और गैर-भेदभाव के बुनियादी सिद्धांतों को बनाए रखने वाला होना चाहिए।



Twitter: <https://twitter.com/cjpindia>
Facebook: <https://www.facebook.com/cjpindia>
Instagram: <https://www.instagram.com/cjpindia>